प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

## आधुनिक काल :

भूगोल का एक स्वतन्त्र विषय के रू में विकास वास्तव में गत तीन शताब्दियों में हुआ। इ तीन शताब्दियों को भूगोल-विकास का (स्वर्ण-युग) कहा जा सकता है। सतहवीं शताब्दी में भूगोल स्कूल के पाठ्यक्रम में नैतिक उपयोगिता के कारण स्थान पाने लगा था। इस शताब्दी में मस्केटर ने पृथ्वी पर नदी तथा भूखण्डों का अध्ययन किया। उसने भूगोल के ज्ञान को व्यवस्थित किया और मानचित्र बनाने की नवीन प्रणाली निकाली। वर्नहार्ड वैरीनियस ने "जियोग्राफिया जनरलिस" लिखकर भूगोल की सामग्री का तीन प्रकार के भूगोल में वर्गीकरण किया।

अट्ठारहवीं शताब्दी में जर्मन दार्शनि काण्ट और स्वीडन निवासी वर्गमैन ने पृथ्वी का सरल सुबोध वर्णन लिखा तथा भूगोल के पाँच प्रकार निश्चि किये। वास्तव में इन्हीं भूगोलवेत्ताओं ने (कार्य-कार भूगोल आरम्भ किया। वास्तव में भूगोल में कार्य-कार सम्बन्ध की स्थापना उस समय हुयी, जब भूगोलवेत्ता ने यह अनुभव किया कि पृथ्वी पर होने वाली प्राकृतिक क्रियाओं - गर्मी, वर्षा, ज्वालामुखी, भूकम्प आदि के पीछे अवश्य कुछ न कुछ भौगोलिक कारण निहित है।

किन्तु भूगोल के क्षेत्र में सर्वाधिक उपयो कार्य उन्नीसवीं शताब्दी के स्वर्णकाल में हुआ। इस युग में विज्ञान की अधिक उन्नति हुई, जिसके फलस्वर भूगोल का भी वैज्ञानिक अध्ययन आरम्भ हुआ। इस समय के भूगोल पर विज्ञानों का भी अत्यधिक प्रभा था और कुछ समय तक भूगोल का विषय विज्ञानों के मिश्रण के रूप में रहा। भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, प्राणीशास्त्र, आदि विज्ञानों

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

उत्पत्ति हुई। इन नये विज्ञानों के सहयोग से भू-पटल रचना को अधिक महत्व हुआ। महान भूगोल-वेत्ता कार्ल रिटर, अलेक्जेण्डर वान हम्बोल्ट ने भूगोल-विकास में पर्याप्त योगदान दिया।

इस काल में भूगोल की परिभाषा 'विभाजन-विज्ञान' से हटकर 'पृथ्वी पर मानव-विज्ञान' अथवा एक ऐसे विज्ञान के रूप में होने लगी जो मानव-जीवन पर, प्राकृतिक वातावरण के प्रभाव को अध्ययन करता है। प्राकृतिक वातावरण (प्रकृति) को ही अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। सन् 1885-95 का काल आधुनिक भूगोल का जन्म-काल कहा जा सकता है।

इस युग में बहुत महत्वपूर्ण भौगोलिक विकास हुए और भौगोलिक ज्ञानकोश की वृद्धि हुई इससे इसे भौगोलिक स्वर्ण-युग कहा जाता है।

इस युग में भूगोल-शिक्षण पद्धति में भी महत्वपूर्ण विकास हुए। अब भूगोल 'स्मरण-शक्ति पर जोर न देकर 'तर्क-बुद्धि' का विषय हो गया भूगोल के अध्ययन करने में दूसरे प्राकृतिक तथा सामाजिक विज्ञानों से सह-सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया भूगोल के अध्ययन के लिये विज्ञान परम आवश्यक माना गया। अतएव भूगोल विषय का सूक्ष्म एवं सुव्यवस्थित अध्ययन वैज्ञानिक आधार पर आरम्भ हुआ और उसकी उच्च शिक्षा देने के लिए विश्वविद्यालयों में समुचित व्यवस्था की गयी। आजकल भूगोल एक स्वतन्त्र विषय है, जिसका महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है कि वह कला होते हुए भी विज्ञान है। सभी भूगोलवेत्ताओं ने कार्य-कारण तथा स हेतु भूगोल के अध्ययन पर जोर दिया। और एशिया अफ्रिका के भूगोल को 'कार्य-कारण' सम्बन्धो की दृष्टि में पर्याप्त अध्ययन किया गया। पाठशालायों में मानचित्र तथा भू-चित्रावली के उपयोग पर अधिक महत्व दिया जाने लगा। भूगोल-सम्बन्धी ज्ञानोन्नति में भाग लेने वाले व्यक्तियों में डारविन, वैगनर कार्लरिटर आदि महान

महत्व व्यक्त थे।

बीसवीं शताब्दी भी भौगोलिक ज्ञान विकास की दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नहीं है। प्राकृति, भू-विज्ञान, भूगर्भशास्त्र तथा भू-आकृति के अध्ययन के साथ-साथ ही भूगोलवेत्ताओं का ध्यान मनुष्य की ओर आकर्षित हुआ भूगोल के अध्ययन का मुख्य विषय क्रियाशील मानव है, न कि केवल निर्जीव पर्वत, आखात, अन्तरीप, तथा नगर इत्यादि। भूगोल की विशेष शाखा, मानव भूगोल का अभ्युदय हुआ। प्राकृतिक दशा, भूमि, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, सागर आदि भौगोलिक वातावरण के तत्वों का प्रभाव, मानव-जीवन पर अध्ययन किया जाने लगा। मनुष्य भूगोल का महत्वपूर्ण केन्द्र माना जाने लगा।

जब भूगोल के अध्ययन का केन्द्र 'मानव जीवन' हो गया तो उसे सामाजिक विज्ञान माना जाने लगा। भूगोल भौतिक तथा सामाजिक विज्ञान दोनों ही है इसका सम्बन्ध एक ओर तो भौतिक विज्ञान (भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, वनस्पति शास्त्र आदि से है तथा दूसरी ओर समाजशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि से है।

'रिचर्ड हर्टशान' भूगोल की प्रकृति के विषय कहते हैं कि "भूगोल ऐसा विषय है जो प्राकृतिक एवं सामाजिक, दोनों ही विज्ञानों से सम्बन्धित है तथा दोनों ही की विशेषताओं का ग्रहण करता है।"

फ्रांस के वाइडल डी ला ब्लाश ने वहाँ के भूगोल में विभिन्न प्रदेशों के मानव-पक्ष की प्रधानता देकर देश का भौगोलिक अध्ययन किया, जीन ब्रून्स ने भी अपनी भूगोल पुस्तक में मानव क्रिया-कलापों को व्यवस्थित रूप से दृष्टिगत रखकर वर्णन किया।

सन् 1905 में एच० जे० हर्बर्टसन ने पृथ्वी के धरा को "विशाल प्राकृतिक प्रदेशों" में विभाजित कर प्रादेशिक भूगोल का अध्ययन आगे बढ़ाया। ये प्रदेश प्राकृतिक उच्चता और जलवायु के आधार पर बनाये गये क्योंकि इन भौगोलिक तथ्यों का मानव क्रिया-कलापों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

प्राचार्य

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

पृथ्वी के प्राकृतिक प्रदेशों के तुलनात्मक अध्ययन को ही भूगोल माना जाता है। सन् 1910-20 के काल में भूगोल में मानवीय तत्वों पर और भी अधिक बल दिया गया। तत्पश्चात् वैल्पटन (1926), फेयरग्रीव (1926) बार्कर (1958) ने आधुनिक भूगोल के विषय को समुन्नत किया। सन् 1930-39 ई० के मध्य भूगोल-अध्ययन-प्रणाली पर अधिक ध्यान दिया गया। आधुनिक समय में भूगोल की सामाजिक महत्ता, सामाजिक उपयोगिता, भूगोल में विद्यार्थियों की रुचि को सुचारु रूप से आकर्षित करना उनकी योग्यता का ध्यान रखना तथा विषय के प्रादेशिक प्रतिपादन आदि पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

इस शताब्दी में भूगोल-शिक्षण पद्धति में 'वैज्ञानिक' तथा 'मानव-कहानी' दोनों का ही सुन्दर समन्वय होना चाहिए। इस विषय को वैज्ञानिक तथा मानवीय अलग-अलग दो विभाजनों की आवश्कता नहीं है। परन्तु आज के युग में भूगोल-अध्यापक को वैज्ञानिक तथा मानवीय दोनों पक्षों में सन्तुलन रखकर सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।

आज के युग में ऐसे भूगोल की अत्यन्त आवश्यकता है, जिसमें वैज्ञानिक ढंग तो अवश्य हो, पर वास्तव में उसमें मानव-पक्ष का सुन्दर सामंजस्य भी हो और मनुष्य को गौरवपूर्ण स्थान भी दिया गया हो।

भारत में भूगोल की ~~उच्च~~ शिक्षा उच्च स्तर पर सर्वप्रथम अलीगढ़ विश्वविद्यालय में प्रारम्भ हुई। इनमें ताहिर रिजवी ने अपने लेखों द्वारा भूगोल को आगे बढ़ाने का कार्य किया। संयुक्त भारत में लाहौर विश्वविद्यालय के अध्यक्ष (काजी अहमद) ने भारत के प्राकृतिक विभाग पर लेख लिखे तथा भारत बँटवारे के समय सीमा निर्धारण का कार्य किया। बनारस विश्वविद्यालय के डॉ० एल० एच० दुब्बर का भौगोलिक विकास में अद्वितीय स्थान रहा। उन्होंने 12 वर्ष रंगून में अध्यक्ष पद रहकर वहाँ के खनिज पदार्थों और

और भूगर्भ शास्त्र पर दो बृहद ग्रन्थ लिखे। ~~इस प्रथम खण्ड जो भारत के~~ कुल भारत के भूगोल पर तीन भाग लिखे। इसका प्रथम खण्ड जो भारत के प्राकृ भूगोल पर है। इन्होंने वैज्ञानिक भौगोलिक परिषद की नींव डाली जिससे सात वर्षों के अन्दर ही कई दर्जन बुलेटिन प्रकाशित किये।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया